



# Pummi

09 Oct 1992

05:25 PM

Patan

Model: Web-MyKundli

Order No: 121580901

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 09/10/1992  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्रवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 17:25:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 29:01:28 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Patan  
राज्य \_\_\_\_\_: Bihar  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 24:14:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 84:12:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:06:48 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 17:31:48 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:12:45 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 18:45:12 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:48:24 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:32:13 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:43:48 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शरद  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 22:40:55 कन्या  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 21:27:14 मीन

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मीन - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: कुम्भ - शनि  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पू०भाद्रपद - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: गुरु  
योग \_\_\_\_\_: वृद्धि  
करण \_\_\_\_\_: तैतिल  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: सिंह  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: सर्प  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: दा-दामिनी  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - लौह  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: तुला

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1914	आश्विन	17
पंजाबी	संवत : 2049	आश्विन	24
बंगाली	सन् : 1399	आश्विन	23
तमिल	संवत : 2049	पुरुटासी	24
केरल	कोल्लम : 1168	कन्नी	23
नेपाली	संवत : 2049	आश्विन	24
चैत्रादि	संवत : 2049	आश्विन	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2049	आश्विन	शुक्ल 13

### पंचांग

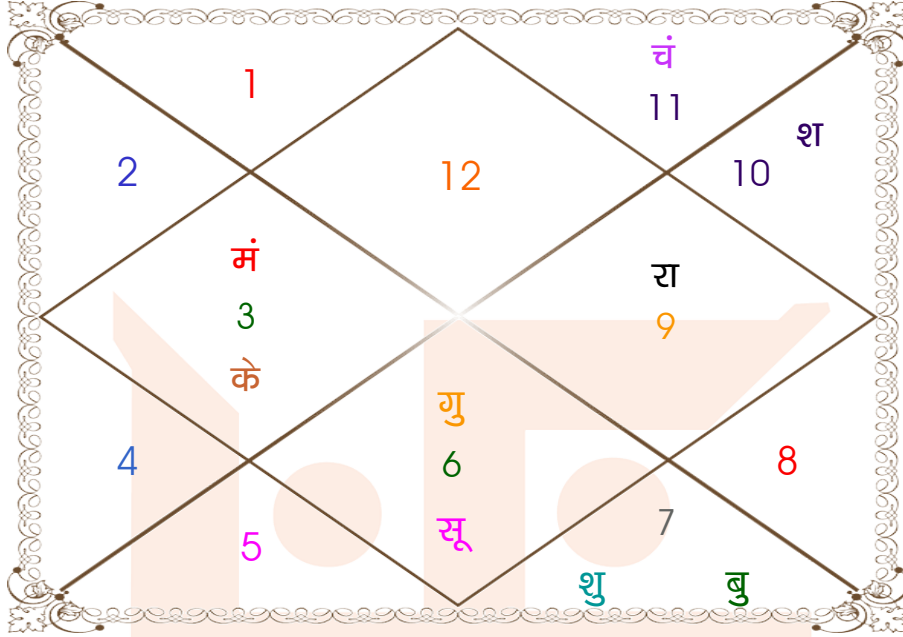
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 13  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 20:22:54  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 13  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : पू०भाद्रपद  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 29:21:35 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पू०भाद्रपद  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : वृद्धि  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 29:39:08 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : वृद्धि  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:21:28 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
भयात \_\_\_\_\_ : 36:29:23  
भभोग \_\_\_\_\_ : 66:20:51  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : गुरु 7 वर्ष 2 मा 21 दि

### घात चक्र

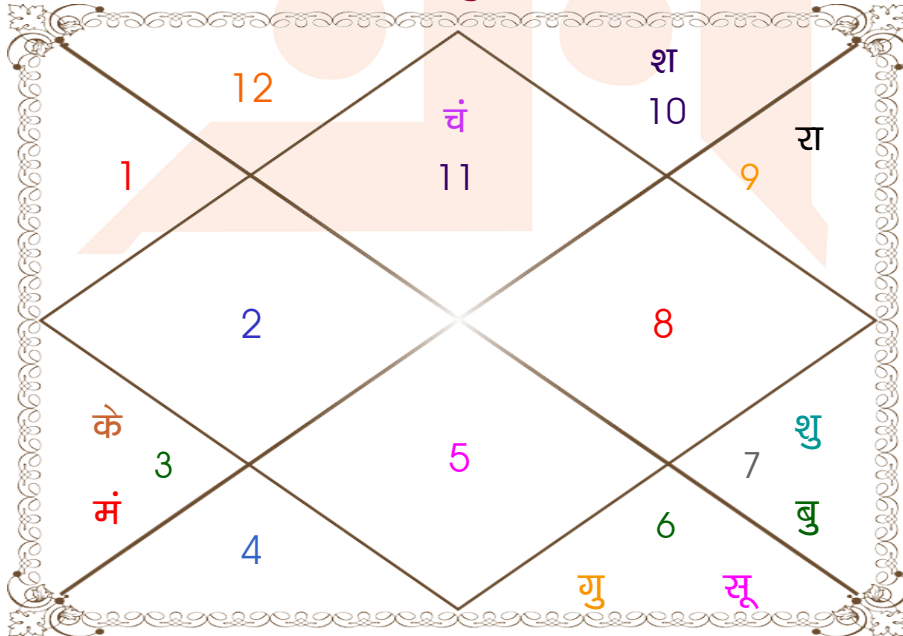
मास \_\_\_\_\_ : चैत्र  
तिथि \_\_\_\_\_ : 3-8-13  
दिन \_\_\_\_\_ : गुरुवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : आर्द्रा  
योग \_\_\_\_\_ : गण्ड  
करण \_\_\_\_\_ : किंस्तुघ्न  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 3  
वर्ग \_\_\_\_\_ : गरुड़  
लग्न \_\_\_\_\_ : मिथुन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : वृष  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मिथुन  
मंगल \_\_\_\_\_ : मिथुन  
बुध \_\_\_\_\_ : वृष  
गुरु \_\_\_\_\_ : कर्क  
शुक्र \_\_\_\_\_ : सिंह  
शनि \_\_\_\_\_ : मेष  
राहु \_\_\_\_\_ : कन्या

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुण्डली

ल			मं के
चं			
श			
रा		शु बु	गु सू

### लग्न कुण्डली

के मं		ल	चं
			श
			रा
सू गु	बु शु		

विंशोत्तरी  
गुरु 7वर्ष 2मा 21दि  
गुरु  
09/10/1992  
01/01/2104

गुरु	31/12/1999
शनि	31/12/2018
बुध	31/12/2035
केतु	31/12/2042
शुक्र	31/12/2062
सूर्य	30/12/2068
चन्द्र	31/12/2078
मंगल	31/12/2085
राहु	01/01/2104

योगिनी  
भ्रामरी 1वर्ष 9मा 20दि  
धान्या  
31/07/2023  
31/07/2026

धान्या	31/10/2023
भ्रामरी	29/02/2024
भद्रिका	30/07/2024
उल्का	29/01/2025
सिद्धा	30/08/2025
संकटा	01/05/2026
मंगला	31/05/2026
पिंगला	31/07/2026

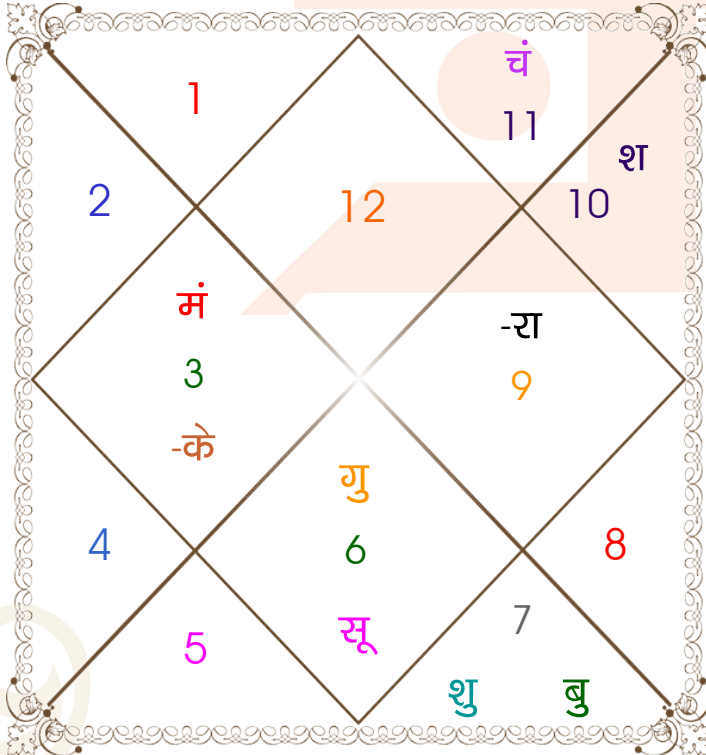
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	21:27:14	479:55:28	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	---
सूर्य			कन्या	22:40:55	00:59:16	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	सूर्य	सम राशि
चंद्र			कुंभ	27:18:44	12:03:50	पूर्वाभाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
मंगल			मिथु	20:23:50	00:27:32	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
बुध			तुला	09:21:31	01:29:34	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	मित्र राशि
गुरु			कन्या	06:00:52	00:12:42	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			तुला	23:46:04	01:13:09	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	शनि	स्वराशि
शनि	व		मक	18:05:46	00:00:40	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	स्वराशि
राहु	व		धनु	00:20:13	00:11:43	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	नीच राशि
केतु	व		मिथु	00:20:13	00:11:43	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	नीच राशि
हर्ष			धनु	20:24:00	00:00:51	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
नेप			धनु	22:27:31	00:00:24	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
प्लूटो			तुला	27:42:39	00:02:04	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	16:37:46	--	पूर्वाषाढा	--	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	--

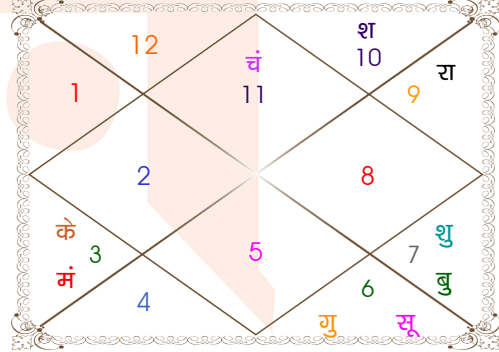
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:38

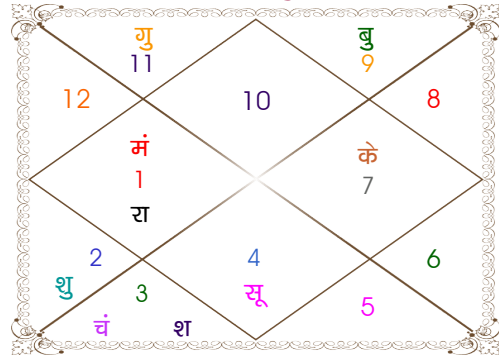
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 05:38:59	मीन 21:27:14
2	मेष 05:38:59	मेष 19:50:45
3	वृष 04:02:30	वृष 18:14:15
4	मिथुन 02:26:01	मिथुन 16:37:46
5	कर्क 02:26:01	कर्क 18:14:15
6	सिंह 04:02:30	सिंह 19:50:45
7	कन्या 05:38:59	कन्या 21:27:14
8	तुला 05:38:59	तुला 19:50:45
9	वृश्चिक 04:02:30	वृश्चिक 18:14:15
10	धनु 02:26:01	धनु 16:37:46
11	मकर 02:26:01	मकर 18:14:15
12	कुम्भ 04:02:30	कुम्भ 19:50:45

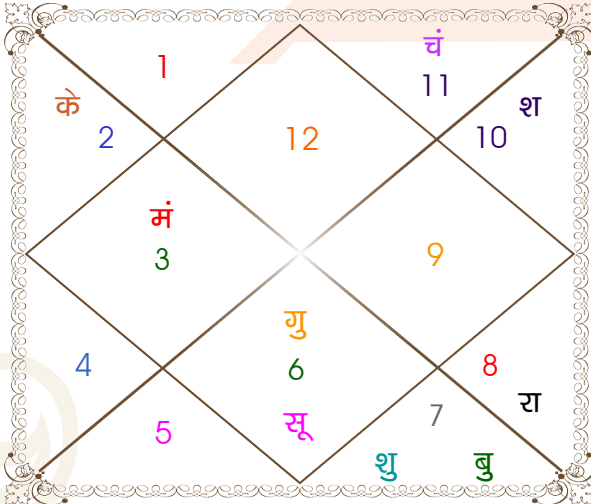
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	21:27:14
2	मेष	25:26:39
3	वृष	22:21:21
4	मिथुन	16:37:46
5	कर्क	12:13:48
6	सिंह	13:05:02
7	कन्या	21:27:14
8	तुला	25:26:39
9	वृश्चिक	22:21:21
10	धनु	16:37:46
11	मकर	12:13:48
12	कुम्भ	13:05:02

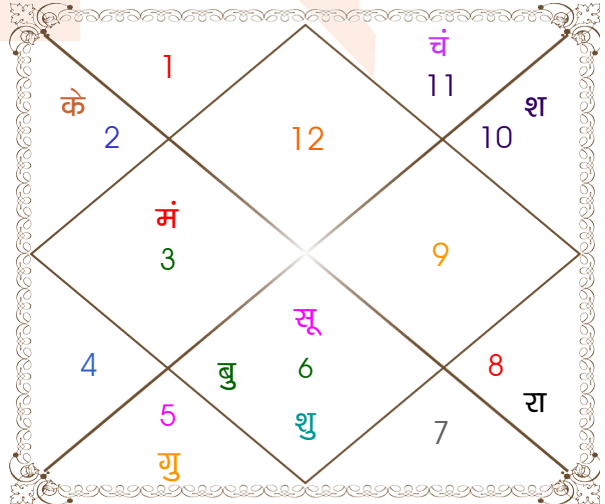
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

### भोग्य दशा काल : गुरु 7 वर्ष 2 मास 21 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
09/10/1992	31/12/1999	31/12/2018	31/12/2035	31/12/2042
31/12/1999	31/12/2018	31/12/2035	31/12/2042	31/12/2062
00/00/0000	शनि 03/01/2003	बुध 29/05/2021	केतु 28/05/2036	शुक्र 01/05/2046
00/00/0000	बुध 12/09/2005	केतु 26/05/2022	शुक्र 28/07/2037	सूर्य 02/05/2047
00/00/0000	केतु 22/10/2006	शुक्र 26/03/2025	सूर्य 03/12/2037	चंद्र 30/12/2048
09/10/1992	शुक्र 22/12/2009	सूर्य 30/01/2026	चंद्र 04/07/2038	मंगल 02/03/2050
शुक्र 14/07/1994	सूर्य 04/12/2010	चंद्र 02/07/2027	मंगल 01/12/2038	राहु 01/03/2053
सूर्य 02/05/1995	चंद्र 04/07/2012	मंगल 28/06/2028	राहु 19/12/2039	गुरु 31/10/2055
चंद्र 31/08/1996	मंगल 13/08/2013	राहु 15/01/2031	गुरु 24/11/2040	शनि 31/12/2058
मंगल 07/08/1997	राहु 19/06/2016	गुरु 22/04/2033	शनि 03/01/2042	बुध 31/10/2061
राहु 31/12/1999	गुरु 31/12/2018	शनि 31/12/2035	बुध 31/12/2042	केतु 31/12/2062

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
31/12/2062	30/12/2068	31/12/2078	31/12/2085	01/01/2104
30/12/2068	31/12/2078	31/12/2085	01/01/2104	00/00/0000
सूर्य 20/04/2063	चंद्र 31/10/2069	मंगल 29/05/2079	राहु 12/09/2088	गुरु 18/02/2106
चंद्र 19/10/2063	मंगल 01/06/2070	राहु 16/06/2080	गुरु 05/02/2091	शनि 01/09/2108
मंगल 24/02/2064	राहु 01/12/2071	गुरु 23/05/2081	शनि 12/12/2093	बुध 08/12/2110
राहु 18/01/2065	गुरु 01/04/2073	शनि 01/07/2082	बुध 01/07/2096	केतु 14/11/2111
गुरु 06/11/2065	शनि 31/10/2074	बुध 29/06/2083	केतु 19/07/2097	शुक्र 10/10/2112
शनि 19/10/2066	बुध 01/04/2076	केतु 25/11/2083	शुक्र 20/07/2100	00/00/0000
बुध 25/08/2067	केतु 31/10/2076	शुक्र 24/01/2085	सूर्य 14/06/2101	00/00/0000
केतु 31/12/2067	शुक्र 01/07/2078	सूर्य 01/06/2085	चंद्र 14/12/2102	00/00/0000
शुक्र 30/12/2068	सूर्य 31/12/2078	चंद्र 31/12/2085	मंगल 01/01/2104	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 7 वर्ष 2 मा 12 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु	बुध - गुरु	बुध - शनि
30/01/2026	02/07/2027	28/06/2028	15/01/2031	22/04/2033
02/07/2027	28/06/2028	15/01/2031	22/04/2033	31/12/2035
चंद्र 14/03/2026	मंगल 23/07/2027	राहु 15/11/2028	गुरु 06/05/2031	शनि 25/09/2033
मंगल 13/04/2026	राहु 15/09/2027	गुरु 19/03/2029	शनि 14/09/2031	बुध 11/02/2034
राहु 30/06/2026	गुरु 02/11/2027	शनि 13/08/2029	बुध 09/01/2032	केतु 09/04/2034
गुरु 07/09/2026	शनि 30/12/2027	बुध 23/12/2029	केतु 26/02/2032	शुक्र 20/09/2034
शनि 28/11/2026	बुध 19/02/2028	केतु 15/02/2030	शुक्र 13/07/2032	सूर्य 08/11/2034
बुध 09/02/2027	केतु 11/03/2028	शुक्र 21/07/2030	सूर्य 24/08/2032	चंद्र 29/01/2035
केतु 11/03/2027	शुक्र 11/05/2028	सूर्य 05/09/2030	चंद्र 01/11/2032	मंगल 28/03/2035
शुक्र 06/06/2027	सूर्य 29/05/2028	चंद्र 22/11/2030	मंगल 19/12/2032	राहु 22/08/2035
सूर्य 02/07/2027	चंद्र 28/06/2028	मंगल 15/01/2031	राहु 22/04/2033	गुरु 31/12/2035

केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल
31/12/2035	28/05/2036	28/07/2037	03/12/2037	04/07/2038
28/05/2036	28/07/2037	03/12/2037	04/07/2038	01/12/2038
केतु 09/01/2036	शुक्र 07/08/2036	सूर्य 04/08/2037	चंद्र 21/12/2037	मंगल 13/07/2038
शुक्र 03/02/2036	सूर्य 29/08/2036	चंद्र 15/08/2037	मंगल 03/01/2038	राहु 04/08/2038
सूर्य 10/02/2036	चंद्र 03/10/2036	मंगल 22/08/2037	राहु 03/02/2038	गुरु 24/08/2038
चंद्र 23/02/2036	मंगल 28/10/2036	राहु 10/09/2037	गुरु 04/03/2038	शनि 17/09/2038
मंगल 02/03/2036	राहु 31/12/2036	गुरु 27/09/2037	शनि 07/04/2038	बुध 08/10/2038
राहु 25/03/2036	गुरु 26/02/2037	शनि 17/10/2037	बुध 07/05/2038	केतु 17/10/2038
गुरु 14/04/2036	शनि 04/05/2037	बुध 05/11/2037	केतु 19/05/2038	शुक्र 11/11/2038
शनि 07/05/2036	बुध 04/07/2037	केतु 12/11/2037	शुक्र 24/06/2038	सूर्य 18/11/2038
बुध 28/05/2036	केतु 28/07/2037	शुक्र 03/12/2037	सूर्य 04/07/2038	चंद्र 01/12/2038

केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध	शुक्र - शुक्र
01/12/2038	19/12/2039	24/11/2040	03/01/2042	31/12/2042
19/12/2039	24/11/2040	03/01/2042	31/12/2042	01/05/2046
राहु 27/01/2039	गुरु 03/02/2040	शनि 27/01/2041	बुध 23/02/2042	शुक्र 22/07/2043
गुरु 19/03/2039	शनि 27/03/2040	बुध 25/03/2041	केतु 16/03/2042	सूर्य 21/09/2043
शनि 19/05/2039	बुध 15/05/2040	केतु 18/04/2041	शुक्र 16/05/2042	चंद्र 31/12/2043
बुध 12/07/2039	केतु 04/06/2040	शुक्र 24/06/2041	सूर्य 03/06/2042	मंगल 11/03/2044
केतु 04/08/2039	शुक्र 30/07/2040	सूर्य 15/07/2041	चंद्र 03/07/2042	राहु 10/09/2044
शुक्र 07/10/2039	सूर्य 17/08/2040	चंद्र 17/08/2041	मंगल 24/07/2042	गुरु 19/02/2045
सूर्य 26/10/2039	चंद्र 14/09/2040	मंगल 10/09/2041	राहु 16/09/2042	शनि 31/08/2045
चंद्र 27/11/2039	मंगल 04/10/2040	राहु 10/11/2041	गुरु 04/11/2042	बुध 19/02/2046
मंगल 19/12/2039	राहु 24/11/2040	गुरु 03/01/2042	शनि 31/12/2042	केतु 01/05/2046

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

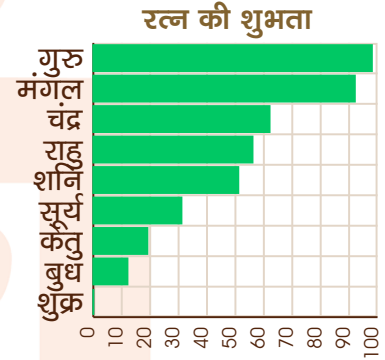
मूलांक	9
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 4
शत्रु अंक	5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	98%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	92%	सुख, धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	62%	कम खर्च, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	56%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
नीलम	शनि	51%	धनार्जन, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	31%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	19%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
पन्ना	बुध	12%	दुर्घटना, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	31/12/1999	44%	69%	98%	0%	100%	0%	51%	56%	19%
शनि	31/12/2018	6%	50%	80%	25%	98%	0%	64%	62%	0%
बुध	31/12/2035	44%	50%	92%	38%	98%	0%	51%	56%	19%
केतु	31/12/2042	6%	50%	98%	12%	98%	0%	28%	38%	44%
शुक्र	31/12/2062	6%	50%	92%	25%	98%	0%	58%	62%	31%
सूर्य	30/12/2068	53%	69%	98%	12%	100%	0%	28%	38%	0%
चंद्र	31/12/2078	44%	75%	92%	25%	98%	0%	51%	38%	0%
मंगल	31/12/2085	44%	69%	100%	0%	100%	0%	51%	38%	31%
राहु	01/01/2104	6%	50%	80%	12%	98%	0%	58%	69%	0%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	09/10/1992-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	कम खर्च
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी लेकिन शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। मांगलिक दोष के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपके पति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पति के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

अतः मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के

मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी।  
दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## ग्रह फल

### सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रुचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

### चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

## मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान्, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

## बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

## गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान् एवं सन्तोषी होता है।

## शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी,

पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

### शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

### राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

### केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध  
( 31/12/2018 - 31/12/2035 )**

बुध की महादशा 31/12/2018 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 31/12/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि द्वितीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। इस दशा में शनि आपकी छोटी यात्रा तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि हुई होगी, संबंधियों से सहायता तथा जमीन तथा सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप स्फूर्तिवान और शक्तिशाली रहेंगे। आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, फ्लू, बदहजमी, पेट दर्द आदि कुछ मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

**अर्थ और व्यवसाय :**

आपको सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपको अवकाश ग्रहण से लाभ, बोनस और ग्रेय्यूडिटी मिल सकती है। सद्दा लाभदायक होगा। अचानक लाभ भी हो सकता है। कुल मिलाकर अर्थ की दृष्टि से यह दशा आपके लिए उत्तम होगी क्योंकि इसमें आपका धन-संग्रह होगा। जीवन-वृत्ति और व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखा-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोग अच्छे करेंगे, उन्हें सफलता उच्च पद और अधिकार मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, आय में वृद्धि तथा लाभ होगा। आपको सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे। आपको सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक उपलब्धि के लिए यह दशा बहुत उत्तम है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

शनि की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन तथा अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपका पैतृक या विरासती सम्पत्ति मिल सकती है। आपको वाहन की प्राप्ति भी होगी। शनि की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। तीर्थान पर जा सकते हैं।

**शिक्षा :**

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपकी अनुसन्धान परियोजना में रुचि हो सकती है। आप सभी परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में बहुत अच्छे करेंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, समाचार माध्यम, जनसंचार आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप

प्रतिभावान, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं तथा विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण और विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपका परिवार के सभी सदस्यों के साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपको बच्चों से सुख तथा आनन्द मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ, पारिवारिक सुख तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को सट्टे में लाभ और सुख मिलेगा जबकि आपके पिता का शुभ कार्यों में व्यय होगा, उनकी यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों के प्रति झुकाव होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विरोधियों पर विजय मिलेगी और कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को जीविकोपार्जन में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका धन संग्रह होगा तथा जमीन-जायदाद और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि में वृद्धि होगी। केतु के फलस्वरूप कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक की अन्तर्दशा में यात्रा तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में जीविकोपार्जन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यश, ख्याति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा बच्चों से सुख की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी यात्रा होगी और सुख तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

**अंतर्दशा :- बुध - सूर्य  
( 26/03/2025 - 30/01/2026 )**

आपके लिए बुध की महादशा 31/12/2018 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 26/03/2025 को प्रारंभ होकर 30/01/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपकी इच्छाएं पूर्ण होंगी। आयु में बड़े लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। व्यापार में लाभ होगा। आत्मविश्वास और सम्मान में वृद्धि होगी। विदेश जा सकते हैं। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। हर काम में सफलता मिलेगी, प्रगति होगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; सम्मान और उच्चपद मिलेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी। आपके पिता को उच्चपद मिलेगा; सरकार से लाभ होगा। माता को अचल संपत्ति मिल सकती है, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा अच्छी होगी, सुख-साधन होंगे, उच्चपद मिल सकता है, सफलता मिलेगी और व्यापार में धनलाभ होगा।

आपकी संतान की इच्छाएं पूर्ण होंगी, साहित्य और दूरदर्शन आदि में सफलता मिल सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चपद और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, धन संचित होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता सक्रिय रहेंगे लाभ, सफलता और धन का संकेत है। व्यापारी सफलता और धन के भागी होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी शिकायत हो सकती है।

**अंतर्दशा :- बुध - चन्द्र  
( 30/01/2026 - 02/07/2027 )**

आपकी बुध की महादशा 31/12/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 30/01/2026 को प्रारंभ होकर 02/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे मगर वे शुभ और धार्मिक कार्यों पर होंगे। यात्राएं हो सकती हैं। विदेश जा सकते हैं। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। मातहत और किरायेदार सहयोग करेंगे। मुकदमे में जीत होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी के कार्यालय में सुविधाएं उत्तम होंगी; विस्तृत कार्यों में सफल होंगे। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, उनका घरेलू जीवन सुखी रहेगा, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, अचल संपत्ति और भूमि से लाभ होगा। माता सुखी, भाग्यशाली और धनी बनेंगी।

आपके भाई-बहन शिक्षा और कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, धन और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे; आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्च बढ़ सकते हैं, यात्रा, तबादले, परिवर्तन का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को संचार माध्यम से लाभ हो सकता है।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों और पैरों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए सफेद चीजें, वस्त्र, चावल और दूध का दान करें।

**अंतर्दशा :- बुध - मंगल  
( 02/07/2027 - 28/06/2028 )**

आपके लिए बुध की महादशा 31/12/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 02/07/2027 को प्रारंभ होकर 28/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको वांछित वस्तुएं उपलब्ध होंगी। शिक्षा उत्तम होगी। अचल संपत्ति के मालिक बन सकते हैं। उत्साह और साहस में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। स्पर्धियों पर विजय होगी; उच्चपद मिल सकता है। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है पर प्रयास करने पर बचाव हो सकता है। व्यापार में विस्तार और साझेदारी से लाभ संभव हैं। व्यापार से संबंधित यात्रा हो सकती है। विदेश में सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे, भाग्यशाली होंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; उन्हें विरासत में संपत्ति मिल सकती है। माता के आत्म-विश्वास में वृद्धि हो सकती है; सफलता, सौभाग्य और उत्तम कार्यक्षमता का योग है।

आपके भाई-बहनों के लिए लाभ, धन, प्रसिद्धि, उत्तम शिक्षा और स्पर्धियों पर विजय का संकेत है। आपकी संतान की सफलता में बाधाएं आ सकती हैं। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है, खर्च बढ़ सकते हैं मगर अध्यात्म में रुचि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी; सफलता और प्रसिद्धि मिलेंगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। छाती और हृदय के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

**अंतर्दशा :- बुध - राहु  
( 28/06/2028 - 15/01/2031 )**

आपके लिए बुध की महादशा 31/12/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 28/06/2028 को प्रारंभ होकर 15/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त करेंगे और प्रसिद्ध होंगे। समाज की भलाई के कार्य करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। जनता के नेता बन सकते हैं। व्यापार का विस्तार होगा, धनलाभ की संभावना है, सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर या मुकदमे में जीत होगी। शिक्षा उत्तम होगी, घरेलू सुख मिलेगा, माता से संबंध उत्तम रहेंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, उससे अच्छी आय हो सकती है।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता धन का संचय करेंगे, सुख-सुविधाओं से संपन्न रहेंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा, उनकी यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, अप्रत्याशित घटना, यात्रा, अप्रत्याशित खर्च, प्रगति में बाधाओं का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धा और परीक्षा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सम्मान, धन और उच्चपद की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय अच्छी होगी; अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं में आत्मविश्वास उत्तम रहेगा, कार्यक्षमता अच्छी होगी, आय बढ़ेगी। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए काले उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान दें।